



“सौधी खुशबू मिट्टी की”

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद,
संस्कृति विभाग द्वारा

बज़्मे सुखन के अंतर्गत

“उर्दू में लोक साहित्य”

विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरा

29 जून, 2024, शाम 5:30 बजे
राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल
में आयोजित है

आप सादर साग्रह आमंत्रित हैं।

डॉ. नुसरत मेहदी
निदेशक

सेमिनार में रजिस्ट्रेशन कराने वाले विद्यार्थियों, रिसर्च स्कालर्स,
अध्यापकों, प्राध्यापकों को अकादमी द्वारा प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे।



डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री



धर्मेंद्र सिंह लोधी
राज्यमंत्री (संस्कृत प्रसार) संस्कृति, पर्यटन,
धार्मिक न्यास एवं धर्मस्य विभाग

व्याख्यान

“उर्दू में लोक अदब”

वक्ता

डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल
प्रो. ख्वाजा मो. इकराम उद्दीन, दिल्ली
अज़रा नक्वी, नोएडा
संचालन:- इक़बाल मसूद, भोपाल



मुशायरा

आमंत्रित शायर

वसीम बरैलवी, बरैली
ज़िया फ़ारूकी, भोपाल
ताहिर फ़राज़, रामपुर
इक़बाल अशहर, दिल्ली
ऋषि श्रृंगारी, भोपाल
बद्र वास्ती, भोपाल
डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल



कृपया समय पर उपस्थित हों कार्यक्रम के दौरान अपना मोबाइल बंद/वाइब्रेशन मोड पर रखें

मप्र उर्दू अकादमी द्वारा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान और मुशायरा आयोजित



मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बर्मे सुखन के अंतर्गत साँधी खुशबू मिट्टी की के तहत उर्दू में लोक साहित्यविषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन 29 जून, 2024, शाम 5:30 बजे राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल में किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ नुसरत मेहदी ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उर्दू में लोक अदब विषय पर कार्यक्रम आयोजित करने का मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी का उद्देश्य लोक साहित्य और उसकी सांस्कृतिक विरासत के महत्व को लोगो के सामने लाना है। लोक साहित्य किसी भी राष्ट्र की भाषा, संस्कृति और परंपराओं का दर्पण होता है, लोक कथाओ, कहावतों, लोक शायरी और नाटकों में गहरी नैतिक शिक्षाएँ छिपी होती हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। हमारे यहाँ की लोककथाएँ, जैसे कि पंचतंत्र और अलिफ लैला ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

कार्यक्रम दो सत्रों पर आधारित था प्रथम सत्र में शाम 5:30 बजे व्याख्यान के तहत डॉ. मो.

नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अजरा नक्वी, नोएडा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे डॉ. नौमान खान ने कहा कि लोक साहित्य हमारी ऐसी समृद्ध पारंपरिक धरोहर या साहित्यिक सरमाया है जिस पर हमारे आज के साहित्य की बुनियाद कायम है। इंसानी इतिहास में मिथकों का भी विशेष महत्व रहा है। अन्य पौराणिक कथाओं और जातक या पंचतंत्र कहानियों ने इंसान को जिज्ञासा एवं आश्चर्य व प्रसन्नता के भावों से सरशर करके जन्दिगी को मनोरंजक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रो. ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन ने कहा कि लोक साहित्य हमारी सदियों पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। लोक साहित्य की विशेषता ये है कि इसमें कोई बनावट का भाव नहीं है। ये शुद्ध मानवीय भावनाओं एवं अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है। जिस तरह भारत एक महान देश है उसी तरह यहाँ का लोक साहित्य भी महान है। भारत के विभिन्न क्षेत्र की जिस तरह सभ्यता एवं संस्कृति अलग अलग है उसी तरह भरत के जिस क्षेत्र के लोक साहित्य को आप देखें उसी क्षेत्र की

सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक तस्वीरें देखने को मिलेंगी। अगर उत्तर भारत के लोक साहित्य की बात करें तो यहाँ की लोक कहानियाँ, गीत, बिरह, बारह मासा एवं महाकाव्य का विशाल सरमाया मौजूद है जिसमें हमारी सभ्यता और संस्कृति की झलक मिलती है। अजरा नक्वी ने कहा कि उर्दू लोक साहित्य में मुहावरों और कहावतों की रंगारंग दुनिया की एक झलक शीर्षक से अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए उर्दू, हिन्दी, फ़ारसी एवं अरबी के मुहावरे और कहावतों के उदाहरण भी पेश किये। इस सत्र का संचालन इक़बाल मसूद, भोपाल द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7:00 बजे अखिल भारतीय मुशायरा आयोजित हुआ जिसमें देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायरों ने अपना कलाम पेश किया। मुशायरे के अध्यक्षता बरसीम बरेलवी ने की।

बरसीम बरेलवी, बरैली
मेरे गाँव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली
तेरा भोलापन दुनिया की सबसे बड़ी पहेली
जिया फ़ारूकी, भोपाल
आँखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं
देता हूँ ज़माने को मगर अपना पता और

ताहिर फराज, रामपुर
जिन्दगी ये हमारी संवर जायेगी
दूर तक रौशनी सी बिखर जायेगी
चाँदनी बाजुओं में उतर आयेगी
काश मिल जाओ तुम दिन ढले
चाँद तारों की छँयाँ तले
इक़बाल अशहर, दिल्ली,
जाने कैसे मेरी प्रीत की धूप ढली
किसकी छांव पड़ी मिरे शैदाई पर
ध्यान फँसा है एक उधड़ते रिश्ते में
आँख टिकी है कुर्ते की तुरपाई पर
ऋषि श्रृंगारी, भोपाल

मैंने जो भी गीत लिखे हैं, सारे तेरे नाम लिखे हैं।
तू माने माने मत माने, सुबह लिखे हैं शाम लिखे हैं।।

बद्र वास्ती, भोपाल
तेरी आहट तेरी खुशबू चौबारे से आँगन तक
कैसे कटेंगे बिन तेरे दिन आने वाले सावन तक
तुम क्या बदले सारे मौसम बदले बदले रहते हैं
पूरी बारिश बीत गई और घर में न आई सीलन तक

डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल
आज सजुँ दर्पण के आगे
कजरी कारी रैन जगा के
मुझको पिया मन भाना है
सखी तो सजन घर जाना है

डॉ. प्रार्थना पंडित
मुशायरे का संचालन बद्र वास्ती द्वारा किया गया।
कार्यक्रम के अंत में डॉ नुसरत मेहदी ने सभी श्रोताओं का आभार व्यक्त किया।



मप्र उर्दू अकादमी... 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरा मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली, तेरा भोलापन दुनिया की सबसे बड़ी पहेली : बरेलवी

सिटी रिपोर्टर . भोपाल

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी संस्कृति विभाग की ओर से बज्मे सुखन के अंतर्गत 'सौंधी खुशबू मिट्टी की' के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरे का आयोजन हुआ।

शुरुआत उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने 'उर्दू में लोक अदब' पर बातचीत से की। पहला सत्र व्याख्यान के नाम रहा, जिसमें डॉ. नौमान खान, प्रो. ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन, अजरा नकवी ने लोक साहित्य पर बात की।



आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं...

दूसरे सत्र में अखिल भारतीय मुशायरा हुआ। इसमें देश के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायरों ने अपने कलाम पेश किए। मुशायरे की अध्यक्षता वसीम बरेलवी ने की और शेर पढ़ा- 'मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली, तेरा भोलापन दुनिया की सबसे बड़ी पहेली...'। भोपाल के जिया फारुकी ने पढ़ा- 'आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं, देता हूँ जमाने को मगर अपना पता...' और रामपुर के ताहिर फराज ने सुनाया- 'जिन्दगी ये हमारी संवर जाएगी, दूर तक रोशनी सी बिखर जाएगी...'। इसके बाद दिल्ली के इकबाल अशाहर, भोपाल के ऋषि शृंगारी और मुशायरे का संचालन करते हुए बद्र वास्ती ने अपने कलाम पेश किए।

स्टेट म्यूजियम में उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान और मुशायरा लोक साहित्य में सभ्यता-संस्कृति की झलक

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरे का आयोजन राज्य संग्रहालय में किया गया। यह आयोजन मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद और संस्कृति विभाग ने मिलकर किया। कार्यक्रम की शुरुआत उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी के उद्बोधन से हुई। कार्यक्रम दो सत्रों में संपन्न हुआ। पहले सत्र में डॉ. मो. नौमान खान, प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन और अजरानकवी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे डॉ. नौमान खान ने कहा कि लोक साहित्य हमारी ऐसी समृद्ध पारंपरिक धरोहर या साहित्यिक संपत्ति है, जिस पर हमारे आज के

भारत का लोक साहित्य भी महान है



साहित्य की बुनियाद कायम है। इंसानी इतिहास में मिथकों का भी विशेष महत्व रहा है। वहीं, प्रो. ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन ने कहा कि लोक साहित्य की विशेषता ये है कि इसमें कोई बनावट का भाव नहीं होता है। ये शुद्ध मानवीय भावनाओं और अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है। भारत की तरह यहां का लोक साहित्य भी महान है।

लिया उर्दू शायरी का आनंद दूसरे सत्र में अखिल भारतीय मुशायरा का आयोजित हुआ, जिसमें भारत के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायरों ने अपना कलाम पेश किया। मुशायरे के अध्यक्षता वसीम बरेलवी ने की। भोपाल की जिया फारूकी ने 'आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं, देता हूं जमाने को मगर अपना पता और' शेर पढ़कर मुशायरे में ताजगी ला दी। रामपुर से आए शायर ताहिर फराज ने 'जिंदगी ये हमारी संवर जाएगी..' जैसी प्रसिद्ध नज्मों को सुनाया। दिल्ली के इकबाल अशहर ने 'जाने कैसे मेरी प्रीत की धूप ढली..' बद्र वास्ती ने 'तेरी आहट तेरी खुशबू चौबारे से आंगन तक' सुनाया।



Date 30 Jun, 2024 - Newspaper - Page11



Image

Text

मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली : वसीम

मप्र उर्दू अकादमी द्वारा 'उर्दू में लोक साहित्य' पर व्याख्यान और मुशायरे आयोजित



रिपोर्टर • IamBhopal

Mobile no. 6266349352

मप्र उर्दू अकादमी द्वारा बच्चे सुखन के अंतर्गत 'सोधी खुशबू मिट्टी की' के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन शनिवार को राज्य संग्रहालय में किया गया। उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने कहा कि उर्दू में लोक अदब विषय पर कार्यक्रम आयोजित करने का मप्र उर्दू अकादमी का उद्देश्य लोक साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के महत्व को सामने लाना है। व्याख्यान की अध्यक्षता कर रहे डॉ. नौमान खान ने कहा कि लोक साहित्य

ऐसी समृद्ध पारंपरिक धरोहर या साहित्यिक सरमाया है, जिस पर हमारे आज के साहित्य की बुनियाद कायम है। इसके अलावा प्रो. ख्वाजा मोहम्मद इकरामुद्दीन, अजरा नकवी ने भी सत्र को संबोधित किया। दूसरे सत्र में अखिल भारतीय मुशायरा हुआ। इसमें वसीम बरेलवी ने मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली..., जिया फारूकी ने आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं..., ताहिर फराज ने जिंदगी ये हमारी संवर जाएगी..., इकबाल अशहर ने जाने कैसे मेरी प्रीत की धूप ढली... सुनाया। वहीं, ऋषि शृंगारी, बद्र वास्ती, और डॉ. प्रार्थना पंडित ने भी अपनी नज्में सुनाई।

दिल अगर टूटा नहीं तो वह दिल कहलाने का हकदार ही नहीं: शायर वसीम बरेलवी

दिल अगर टूटा नहीं तो वह दिल कहलाने का हकदार ही नहीं। कविता, शायरी के माध्यम से दुनिया में जो कुछ भी सृजन हुआ है, वह हमेशा उसी बिखराव से निकलकर आया है, जो आपके जीवन में कहीं न कहीं हुई है। यह बात अलग है बहुत से दिल टूटते हैं, उनके पास जुवान नहीं होती। कवि और शायर को ऊपर वाला जुवान दे देता है। वह अपने खुद नहीं वयां करता, बल्कि पूरे समाज का खुद वयां करता है। यह कहना है शायर वसीम बरेलवी का। जो कि उर्दू अकादमी के कार्यक्रम में आए हुए थे। इस दौरान उन्होंने नवदुनिया से खास बातचीत में जीवन से जुड़े अनुभव सुनाए।



वरिष्ठ शायर वसीम बरेलवी

वसीम बरेलवी ने कहा कि शायरी में मेरी एक उम्र गुजरी है, आज युवा पीढ़ी को देखकर बहुत खुशी होती है, जो मुझे पसंद करते हैं। आज मुझे चौथी पीढ़ी भी सुन रही है। इस दौरान जीवन में कई उतार-चढ़ाव भी आए, मुझे 60 वर्ष हो गए मंच पर प्रस्तुति देते हुए।

● शायर बरेलवी ने नवदुनिया से की खास बातचीत, साझा किए जीवन के अनुभव

शायरी एक ऐसी कला है

जो सीधे ईश्वर की देन

वसीम बरेलवी ने कहा कि शायरी ऐसी कला है जो सीधे ईश्वर की देन है, वहीं आपके अंदर सृजन करता है। इसे सिखाया नहीं जा सकता है। युवाओं में बहुत टैलेंट है। आज के युवाओं में सोशल मीडिया की वजह से जल्दबाजी बहुत है। वह शोहरत और मुकाम जल्दी पाना चाह रहे हैं। लेकिन युवाओं को ठहराव व रियाज करना चाहिए, जिसकी थोड़ी कमी है। नए बच्चों को कहना चाहता हूँ कि वह अपने आपको पढ़ेंगे, उतना दूसरों को अपने पढ़ने के लायक बनाएंगे। उन्होंने कहा कि कई शायरी ऐसी है जो कि एक समय बाद फेमस हुई। आज भी कई ऐसे लोग मिलते हैं जो मुझे 50 वर्ष पुरानी शायरी सुनाते हैं। वह शेर जो बहुत मैच्योरिटी के बाद आपके समझ में आना था, वह आज के बच्चों को पढ़ते हुए सुनता हूँ, तो अच्छा लगता है।

मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली...

जाने कैसे मेरी प्रीत की धूप ढली, किसकी छांव पड़ी मरे शौदाई पर..., मैंने जो भी गीत लिखे हैं, सारे तेरे नाम लिखे हैं..., तेरी आहट तेरी खुशबू चौबारे से आंगन तक, कैसे कटेंगे बिन तेरे दिन आने वाले सावन तक...। कुछ ऐसे ही रचनाएं सुनने को मिली राज्य संग्रहालय में। मौका था उर्दू अकादमी की ओर से आयोजित उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का। इस अवसर पर देश भर से आए शायरों में अपने कलाम पढ़े।

आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं...

बरेलवी ने मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली, तेरा भोलापन दुनिया की सबसे बड़ी पहली... को सुनाया तो श्रोताओं ने तालियों के साथ स्वागत किया। मुशायरे में आगे बढ़ते हुए डा. प्रार्थना पंडित ने आज सजूं दर्पण के आगे, कजरी कारी रैन जगा के, मुझको पिया मन भाना है सखी तो सजन घर जाना है... को सुनाया। जिया फारुकी ने आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं, देता हूँ जमाने को मगर अपना पता और ... को पढ़ा।

हिंदी और उर्दू को करीब लाने के लिए मुशायरे की शुरुआत

वसीम बरेलवी कहते हैं कि बशीर बद्र के साथ 70 से 90 तक हिंदी और उर्दू को करीब लाने के लिए पूरे हिंदुस्तान में मुशायरे की शुरुआत की, जिससे उर्दू की समझ हिंदी वालों तक हो जाए। इससे उर्दू को बहुत बड़ा दायरा मिला। शायरी को नया भाषायी रूप मिला, वह इन महफिलों के कारण मिला। दोनों से शायरी को सबका बनने की कोशिश की। कोशिश यह रही है सियासी नजर से न देखे बल्कि इंसानी रिश्तों की नजर से देखें। हमने मोहब्बत के जरिए उर्दू को लोगों तक पहुंचाया, राजनीति से दूर रहकर।

भोपाल, रविवार 30 जून 2024

haribhoomi.com

'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरा मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली की सबसे बड़ी पहेली

हरिभूमि न्यूज ►► भोपाल

मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बज्मे सुखन के अंतर्गत 'सौधी खुशबू मिट्टी की' के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन शनिवार को राज्य संग्रहालय में किया गया।

अखिल भारतीय मुशायरा में देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायरों ने अपना कलाम पेश किया। मुशायरे की अध्यक्षता वसीम बरेलवी ने की। वसीम बरेलवी, बरेली मेरे गांव की मिट्टी तेरी महक बड़ी अलबेली तेरा भोलापन दुनिया की सबसे बड़ी पहेली... जिया फारुकी ने आंखें हैं कि अब तक इसी चौखट पे धरी हैं।





Image

Text

उर्दू में लोक साहित्य पर लेक्चर व मुशायरा आज

राज्य संग्रहालय में मप्र उर्दू अकादमी का आयोजन

रिपोर्टर • IamBhopal

Mobile no. 9827080406

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी द्वारा बज्मे सुखन के अंतर्गत 'सौंधी खुशबू मिट्टी की' के तहत उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन किया जा रहा है। 29 जून को शाम 5.30 बजे राज्य संग्रहालय में कार्यक्रम होगा।

उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने कहा कि उर्दू में लोक साहित्य की परंपरा बहुत प्राचीन और समृद्ध है लेकिन उर्दू में इस विषय पर बहुत ही कम कार्यक्रम आयोजित हुए

हैं। उर्दू और हिंदी में लोक साहित्य का संयुक्त धरोहर है। शाम 5.30 बजे व्याख्यान में डॉ. मो. नौमान खान, प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अजरा नकवी, नोएडा अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगीं। शाम 7 बजे अखिल भारतीय मुशायरे में वसीम बरेलवी, जिया फारूकी, ताहिर फराज, इकबाल अशहर, ऋषि शृंगारी, बद्र वास्ती, डॉ. प्रार्थना पंडित शामिल रहेंगीं। इस दौरान रजिस्ट्रेशन करके उपस्थित होने वाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं प्राध्यापकों को अकादमी द्वारा प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे। कार्यक्रम में प्रवेश निःशुल्क रहेगा।

मप्र उर्दू अकादमी द्वारा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान और मुशायरा आज राज्य संग्रहालय में

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बज्मे सुखन के अंतर्गत सौंधी खुशबू मिट्टी की के तहत उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन 29 जून, 2024, शाम 5-30 बजे राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल में किया जाएगा। उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ नुसरत मेहदी ने कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि उर्दू में लोक साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन और समृद्ध है लेकिन उर्दू में इस विषय पर बहुत ही कम कार्यक्रम आयोजित हुए हैं जबकि ये समय की ज़रूरत है कि जो उर्दू और हिन्दी में लोक साहित्य का संयुक्त सरमाया है उसमें जो काम पहले

हुआ है और वर्तमान में भी हो रहा है तो वो लोगों के सामने आये। विशेष रूप से युवा पीढ़ी अपने इस गौरवपूर्ण इतिहास को जाने। इसी को दृष्टिगत रखते हुए ये कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम दो सत्रों पर आधारित होगा प्रथम सत्र में शाम 5-30 बजे व्याख्यान के तहत डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अज़रा नक्वी, नोएडा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। इस सत्र का संचालन इकबाल मसूद, भोपाल द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7-00 बजे अखिल भारतीय मुशायरा आयोजित किया जाएगा जिसमें देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायर मौजूद रहेंगे। मुशायरे में कलाम पेश करने वाले शायरों में वसीम बरेलवी, बरैली ज़िया फारूकी, भोपाल ताहिर फराज़, रामपुर इकबाल अशहर, दिल्ली, ऋषि श्रृंगारी, भोपाल बद्र वास्ती, भोपाल डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल आदि के नाम शामिल हैं। डॉ नुसरत मेहदी ने अधिक जानकारी देते हुए कहा कि व्याख्यान में रजिस्ट्रेशन करके उपस्थित होने वाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं प्राध्यापकों को अकादमी द्वारा प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। डॉ. नुसरत मेहदी ने नगर के सभी साहित्य एवं कला प्रेमियों से कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

व्याख्यान

“उर्दू में लोक अदब”

वक्ता

डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल
प्रो. ख्वाजा मो. इकराम उद्दीन, दिल्ली
अज़रा नक्वी, नोएडा
संचालन:- इकबाल मसूद, भोपाल



मुशायरा

आमंत्रित शायर

वसीम बरेलवी, बरैली
ज़िया फारूकी, भोपाल
ताहिर फराज़, रामपुर
इकबाल अशहर, दिल्ली
ऋषि श्रृंगारी, भोपाल
बद्र वास्ती, भोपाल
डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल



कृपया समय पर उपस्थित हो कार्यक्रम के दौरान अपना मोबाइल बंद/वाइब्रेशन मोड पर रखें

आज के कार्यक्रम

लोक साहित्य पर व्याख्यान, मुशायरा

सिटी रिपोर्टर। मप्र उर्दू अकादमी की ओर से बज्मे सुखन के अंतर्गत 'सौंधी खुशबू मिट्टी की' शृंखला के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरे का आयोजन शनिवार शाम 5:30 बजे राज्य संग्रहालय में होने जा रहा है। उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने बताया- उर्दू में लोक साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन और समृद्ध है, लेकिन उर्दू में इस विषय पर बहुत ही कम कार्यक्रम होते हैं। कार्यक्रम दो सत्रों में होगा।

میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی الیبیلی :: تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی پہیلی

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد



بھوپال 29 جون: حصہ پرنٹس اردو اکادمی، مسکوئی پر پندرہ گھنٹہ گفت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت ” اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2023 کو شام 3:05 بجے ایسٹ میوزیم، شاملہ سٹیٹس، بھوپال میں کیا گیا۔ پروگرام کی شروعات میں اردو اکادمی کی انٹریکٹو ڈائریکٹر حضرت مہدی نے پروگرام کے اغراض و مقاصد پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ حصہ پرنٹس اردو اکادمی کا مقصد ہے کہ لوک ادب کی اہمیت اور اس کے ثقافتی ورثے پر بات ہو اور لوگ اپنے اس قیمتی سرمائے کے بارے میں جانیں اور اس کی اہمیت کو یاد رکھیں۔ لوک ادب کی بھی قوم کی زبان، ثقافت اور روایات کا آئینہ دار ہوتا ہے، لوگ کہنا چاہیں اور ضرب الامثال اور لوک شاعری میں گہری اخلاقی تعلیمات پوشیدہ ہوتی ہیں، جو سٹل ورثہ منتقل ہوتی ہیں۔ ہمارے یہاں کی لوک کہانیاں، جیسے کہ ”چنگیز خاں اور الف لیلا“ ایسی ہی مثالیں ہیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی تھا۔ پہلے اجلاس میں شام 3:05 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں (بھوپال)، پروفیسر خواجہ محمد آکرام الدین (نئی دہلی) اور مدنا نقوی (نویڈ) نے اردو میں لوک ادب کے موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار کیا۔ سیمینار کی صدارت فرماتے ہوئے ڈاکٹر محمد نعمان خاں نے کہا کہ لوک ادب ہماری ایسی و قیغ روایتی جڑ ہے جو ہر یادنی سرمایہ ہے جس پر ہمارے آج کے لوگ کی بنیاد استوار ہے۔ انسانی ارتقائی تاریخ میں اساطیر (MY TH) کی بھی

اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال مسعود نے انجام دیے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل چند مشاعرہ منعقد ہوا جس میں عائی شہرت یافتہ شعراء نے اپنا کلام پیش کیا۔ مشاعرے کی صدارت پروفیسر و نسیم بریلوی نے فرمائی۔ جن شعراء نے کلام پیش کیا ان کے نام اور اشعار درج ذیل ہیں۔ میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی الیبیلی، تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی پہیلی (نسیم بریلوی۔ بریلی)۔ ایک حدت ہوئی میں نصیر ہوں اپنے تگھے سے باہر گھاسی نہیں، جب بھی چاہا کہ لکھوں تو رسوائی بھی

پریت کی دھوپ اٹھی، کس کی چھاؤں پڑی میرے شیدائی پر، درمیان پھنسا ہے ایک ادھرتے رشتے میں، آنکھ لگی ہے کرتے کی تریانی پر (اقبال اشہر۔ دہلی)۔ میں نے جو بھی گیت لکھے ہیں، سارے تیرے نام لکھے ہیں، تو مانے مانے، سچ لکھے ہیں شام لکھے ہیں (دلی شکراری۔ بھوپال)۔ تیری آہٹ تیری خوشبو چہ ہارے سے آئین تک، کیسے کہیں گے بن تیرے دن آنے والے سداون تک ہم کیا بدلے سارے موسم بدلے بدلے رہتے ہیں، پوری بارش بیت کی اور گھر میں نہ آئی سٹین تک (بدر واسطی)۔ بھوپال)۔ آج کلوں درہن کے آگے بکری کاری رین چکا کے، مجھ کو بچا من بھانا ہے سسکی تو بچن گھر جاتا ہے (ڈاکٹر پرارتقا پنڈت۔ بھوپال)۔ مشاعرے کی نظامت کے فرائض بدر واسطی نے حسن خوبی انجام دیے۔ پروگرام کے آخر میں ڈاکٹر حضرت مہدی نے تمام شرکاء کا شکریہ ادا کیا۔

ترقی یافتہ ریوا کے ساتھ گرین، کلین اور میبلدی ریوا بنانے میں شریک نہیں بھوپال 29 جون: نائب وزیر اعلیٰ مسز سجاد رحیل نے کہا ہے کہ آج سے ایک مقدس کام شروع ہوا ہے۔ پودے زمین کو سنوارتے ہیں اور یہ آنے والی نسلوں کے لیے مفید ثابت ہوں گے۔ انہوں نے ریوا کو گرین کلین اور میبلدی ریوا بنانے میں سب سے تعاون کی اپیل کی۔



وزیر مملکت نے گوند پورہ علاقہ کے ترقیاتی کاموں کا جائزہ لیا بھوپال 29 جون: وزیر مملکت پسماندہ طبقہ اور اقلیتی بہبود (آزادانہ چارج) شریستی کرشنا گور نے سٹیج کوور ہالز کاؤنٹری میں گوند پورہ علاقہ کے ترقیاتی کاموں کا جائزہ لیا۔ انہوں نے انصران کو ترقیاتی کاموں کو مقررہ مدت میں کرنے کی ہدایت دی۔ وزیر مملکت شریستی گور نے گوند پورہ میں ایم جی ایم اسکول سے مجبوری ہائی پاس اور چٹائی سے مجبوری گاؤں ہائی پاس سڑک تعمیر کی ترقی کا جائزہ لیا۔ انہوں نے کہا کہ انصران ان کے ماتحت چھلنے کے کاموں کی مانیٹرنگ کریں اور ترقیاتی کاموں کو مقررہ مدت میں مکمل کرنا۔ ایس ڈی ایم گوند پورہ سڑکوں کے کھرے، میونسپل کارپوریشن، تعمیری عامہ، پولس سمیت متعلقہ محکومات کے انصران مینٹنک میں موجود تھے۔

۵ جولائی کو ایبٹ آباد میں سرگرمیوں کا اہتمام ہوا۔ اس طرح کے اعمال سے ہی ماحول پیدا ہوتا ہے۔

پودوں کا بیج، حکومت ان کی دیکھ بھال کرے گی۔

کی تلاش و بہبود کے لیے وقف ہے۔

میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی لمبیلی ☆ تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی سہیلی

”میم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد“

بھوپال ۳۰ جون (پریس ریلیز) مدھیہ پردیش اردو اکادمی، منسکرتی پریشاد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد ۲۹ جون، ۲۰۲۳ کو شام ۵:۳۰ بجے اسٹیٹ میڈیم، شاملہ بلس، بھوپال میں کیا گیا۔ پروگرام کی شروعات میں اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے اغراض و مقاصد پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ مدھیہ پردیش اردو اکادمی کا مقصد ہے کہ لوک ادب کی اہمیت اور اس کے ثقافتی ورثے پر بات ہو اور لوگ اپنے اس قیمتی سرمائے کے بارے میں جانیں اور اس کی اہمیت کو یاد رکھیں۔ لوک ادب کسی قوم کی زبان، ثقافت اور روایات کا آئینہ دار ہوتا ہے، لوک کہانیوں اور ضرب الامثال اور لوک شاعری میں گہری اخلاقی تعلیمات پوشیدہ ہوتی ہیں، جو نسل در نسل منتقل ہوتی ہیں۔ ہمارے یہاں کی لوک کہانیاں، جیسے کہ ”بچہ تنز“ اور ”الف لیلہ“ ایسی ہی مثالیں ہیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی تھا۔



ہماری ایسی و قیغ روایتی دھرو ہر یا ادبی سرمایہ ہے جس پر ہمارے آج کے ادب کی بنیاد استوار ہے۔ انسانی ارتقائی تاریخ میں اساطیر (THMY) کی بھی خاص اہمیت رہی ہے۔ بعض دیو مالائی مافوق الفطرت عناصر اور جانک یا شیخ تنز کہانیوں نے انسان کو تجسس و اشتیاق حرکت و عمل، حیرت و مسرت کے جذبات سے سرشار کر کے زندگی کو پر کیف بنانے میں اہم کردار ادا کیا ہے۔ لسانی رنگارنگی، تہذیبی برہمگونی مختلف النوع رسم و رواج کے اعتبار سے بھی لوک ادب یا عوامی ادب اپنی خاص اہمیت رکھتا ہے۔ پروفیسر خواجہ اکرام الدین نے کہا کہ لوک ادب ہماری صدیوں پرانی تہذیب و تمدن کا عکاس اور نماز ہے۔

لوک ادب کی خاص صفت یہ ہے کہ اس میں کوئی تشنع اور بناوٹ نہیں

ہے۔ یہ خالص انسانی جذبات و احساسات اور مشاہدات کا ترجمان ہے۔ جس طرح ہندستان ایک عظیم ملک ہے اسی طرح یہاں کا لوک ادب بھی عظیم ہے۔ ہندستان کے الگ الگ خطے کی جس طرح تہذیب و ثقافت الگ الگ ہے اسی طرح ہندستان کے جس خطے کے لوک ادب کو آپ دیکھیں اسی خطے کی تہذیبی، ثقافتی، مذہبی، اور سماجی تصویریں دیکھنے کو ملیں گی۔ اگر شمالی ہندستان کے لوک ادب کی بات کریں تو یہاں کی لوک کہانیاں، گیت، برہ، پارہ ماسہ اور رزمیہ شعر و ادب کا عظیم ترنیزہ موجود ہے جس میں صدیوں پرانی ہماری تہذیب و ثقافت کی جھلک ملتی ہے۔

عذرا نقوی نے اردو لوک ادب میں محاوروں اور کہاوتوں کی رنگارنگ دنیا

کی ایک جھلک عنوان سے اپنا مقالہ پیش کرتے ہوئے اردو، ہندی، فارسی اور عربی سے مثالیں بھی پیش کیں۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوا جس میں عالمی شہرت یافتہ شعراء نے اپنا کلام پیش کیا۔ مشاعرے کی صدارت پروفیسر و سیم بریلوی نے فرمائی۔ جن شعراء نے کلام پیش کیا ان کے نام اور اشعار درج ذیل ہیں۔

میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی لمبیلی تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی سہیلی (وسیم بریلوی۔ بریلی) ایک مدت ہوئی میں فقیر ہوں اپنے بچھے سے باہر گیا ہی نہیں جب بھی چاہا کہ نگلوں تو روانی بھی مسکراتی

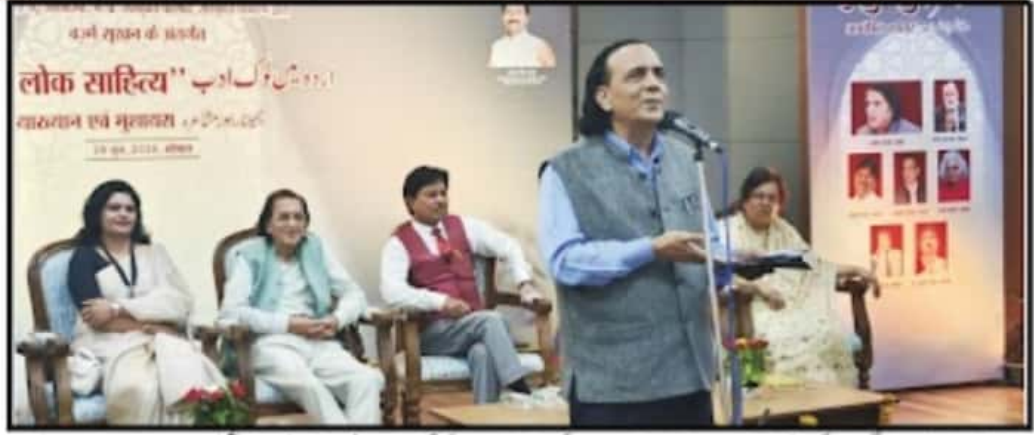
ہوئی ساتھ میرے چلی (ضیاء فاروقی۔ بھوپال) زندگی یہ ہماری سنور جائے گی دور تک روشنی سی بکھر جائے گی چاندنی بازوؤں میں اتر آئے گی کاشل جاؤ تم دن ڈھلے چاندناہوں کی چھیاں تلے (طاہر فراز۔ رام پور) جانے کیسے میری پریت کی دھوپ ڈھلی کس کی چھانوں پڑی میرے شیدائی پر دھیان پھنسا ہے ایک ادھر تے رشتے میں آنکھ لگی ہے کرتے کی ترپائی پر (اقبال اشہر۔ دہلی)

میں نے جو بھی گیت لکھے ہیں، سارے تیرے نام لکھے ہیں تو مانے مت مانے، بیچ لکھے ہیں شام لکھے ہیں (رشنی شرنگاری۔ بھوپال) تیری آہت تیری خوشبو چوہارے سے آگن تک کیسے نکلیں گے بن تیرے دن آنے والے سادان تک تم کیا بدلے سارے موسم بدلے بدلے رہے ہیں پوری بارش بیت گ، اور گھر میں نہ آئی سلن تک بدر واسطی۔ بھوپال،

آج تمہوں درپن کے آگے کجبری کاری رین جگا کے مجھ کو پنا من بھانا ہے سکھی تو سجن گھر جانا ہے ڈاکٹر پراقتنا پنڈت۔ بھوپال مشاعرے کی نظامت کے فرائض بدر واسطی نے انجام دیے۔ پروگرام کے آخر میں ڈاکٹر نصرت مہدی نے تمام شرکاء کا شکریہ ادا کیا۔

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد

مدھیہ پردیش اردو اکادمی، سنسکرتی بریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2024 کو شام 05:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ ہلس، بھوپال میں کیا گیا۔



ایک مدت ہوئی میں فقیر ہوں اپنے کھیلے سے باہر گیا ہی نہیں
جب بھی چاہا کہ نکلوں تو رسوائی بھی مسکرائی ہوئی ساتھ میرے چلی
(ضیاء قاروقی۔ بھوپال)

زندگی یہ ہماری سنور جائے گی
دور تک روشنی ہی بکھر جائے گی
چاندنی بازوؤں میں اتر آئے گی
کاش مل جاہتم دن اٹلے چاند تاروں کی چھیاں تے
(طاہر فراز۔ رام پور)

جانے کیسے میری پریت کی دھوپ ڈھلی
کس کی چھاکوں بڑی میرے شیدائی پر
دھیان پھنسا ہے ایک اوجھرتے رشتے میں
آنکھ کھلی ہے کرتے کی ترپائی پر

(اقبال اشہر۔ دہلی)
میں نے جو بھی گیت لکھے ہیں، سارے تیرے نام لکھے ہیں
تو مانے مت مانے، سچ لکھے ہیں شام لکھے ہیں
(رشی شرنگاری۔ بھوپال)

تیری آہٹ تیری خوشبو جو ہمارے سے آگن تک
کیسے کہیں گے، بن تیرے دن آنے والے ساون تک
تم کہا بد لے سارے موسم بدلے بدلے رہتے ہیں
پوری بارش بیت گ، اور گھر میں نہ آئی سیلن تک
(بدر واسطی۔ بھوپال)

آج بچوں درپن کے آگے
کجھری کاری رین چگا کے
کو بیامن بھانا ہے
کسکی تو جن گھر جانا ہے
(ڈاکٹر پراگھنا چند۔ بھوپال)

مشاعرے کی نظامت کے فرائض بدر واسطی نے
انجام دیے۔ پروگرام کے آخر میں ڈاکٹر نصرت مہدی نے
تمام شرکا کا شکر یہ ادا کیا۔
(وسیم بریلوی۔ بریلی)

انسان کو بھس و اشتیاق حرکت و عمل، حیرت و مسرت کے
جذبات سے سرشار کر کے زندگی کو پر کیف بنانے میں اہم
کردار ادا کیا ہے۔ لسانی رنگارنگی، تہذیبی بولچومونی، مختلف
النوع رسم و رواج کے اعتبار سے بھی لوک ادب یا عوامی
ادب اپنی خاص اہمیت رکھتا ہے۔ پروفیسر خولیدہ اکرام
الدین نے کہا کہ لوک ادب ہماری صدیوں پرانی
تہذیب و تمدن کا عکاس اور نماز ہے۔ لوک ادب کی خاص
صفت یہ ہے کہ اس میں کوئی تصنع اور بناوٹ نہیں ہے۔
یہ خالص انسانی جذبات و احساسات اور مشاہدات کا
ترجمان ہے۔ جس طرح ہندستان ایک عظیم ملک ہے
اسی طرح یہاں کا لوک ادب بھی عظیم ہے۔ ہندستان
کے الگ الگ۔ خطے کی جس طرح تہذیب و ثقافت الگ
الگ ہے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال
مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے
کل ہند مشاعرہ منعقد ہوا جس میں عالمی شہرت یافتہ شعراء
نے اپنا کلام پیش کیا۔ مشاعرے کی صدارت پروفیسر وسیم
بریلوی نے فرمائی۔ جن شعراء نے کلام پیش کیا ان کے
نام اور اشعار درج ذیل ہیں۔

بھوپال: پروگرام کی شروعات میں اردو اکادمی کی
ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے اغراض و
مقاصد پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ مدھیہ پردیش اردو
اکادمی کا مقصد ہے کہ لوک ادب کی اہمیت اور اس کے
ثقافتی ورثے پر بات ہو اور لوگ اپنے اس قیمتی سرمائے
کے بارے میں جانیں اور اس کی اہمیت کو یاد رکھیں۔ لوک
ادب کسی بھی قوم کی زبان، ثقافت اور روایات کا آئینہ دار
ہوتا ہے، لوک کہانیوں اور ضرب الامثال اور لوک شاعری
میں گہری اخلاقی تعلیمات پوشیدہ ہوتی ہیں، جنہیں درنسل
منتقل ہوتی ہیں۔ ہمارے یہاں کی لوک کہانیاں، جیسے کہ
"پنچ تنز" اور "الف لیلہ" ایسی ہی مثالیں ہیں۔ پروگرام
دو اجلاس پر مبنی تھا۔ پہلے اجلاس میں شام 30:5 بجے
سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں۔ بھوپال، پروفیسر
خولیدہ محمد اکرام الدین۔ نئی دہلی اور عذرا نقوی۔ نونیدیا
اردو میں لوک ادب "موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار
کیا۔ سیمینار کی صدارت فرماتے ہوئے ڈاکٹر محمد نعمان
خاں نے کہا کہ لوک ادب ہماری ایسی واقع روایتی دھروہر
یا ادبی سرمایہ ہے جس پر ہمارے آج کے ادب کی بنیاد
استوار ہے۔ انسانی ارتقائی تاریخ میں اساطیر (MY)
(TH) کی بھی خاص اہمیت رہی ہے۔ بعض دیو مالا کی
ما فوق الفطرت عناصر اور جانتک یا پنچ تنز کہانیوں نے

”ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر

سیمینار اور مشاعرے کا انعقاد آج اسٹیٹ میوزیم میں“

نعمان خاں۔ بھوپال، پروفیسر خواجہ محمد اکرام الدین۔ نئی دہلی اور عذرا نقوی۔ نوبیڈا” اردو میں لوک ادب“ موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار کریں گے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوگا جس میں وسیم بریلوی۔ بریلی، ضیا فاروقی۔ بھوپال، طاہر فراز۔ رام پور، اقبال اشہر۔ دہلی، رشی شر نگاری۔ بھوپال، بدر واسطی۔ بھوپال، ڈاکٹر پرارتھنا پنڈت۔ بھوپال جیسے معروف شعراء اپنا کلام پیش کریں گے۔ ڈاکٹر نصرت مہدی نے مزید تفصیلات دیتے ہوئے کہا کہ سیمینار میں رجسٹریشن کر کے شامل ہونے والے طلباء، ریسرچ اسکالروں اور پروفیسروں کو اکادمی کے ذریعے شوقیہ دیے جائیں گے۔ انھوں نے شہر کے سبھی مہبان ادب و فن سے پروگرام میں شرکت کرنے کی درخواست کی ہے۔

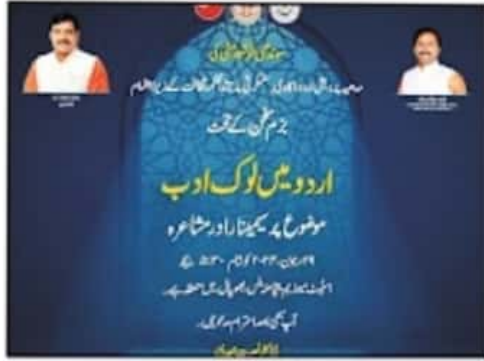


بھوپال ۲۸ جون (پریس ریلیز) مدھیہ پردیش اردو اکادمی، سنسکرتی پریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد ۲۹ جون، ۲۰۲۳ کو شام ۵:۳۰ بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ ہلس، بھوپال میں کیا جائے گا۔ اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے بارے میں بتاتے ہوئے کہا کہ اردو میں لوک ادب کی روایت بہت قدیم اور ثروت مند ہے لیکن اردو میں اس موضوع پر بہت ہی کم پروگرام منعقد ہوئے ہیں جبکہ یہ وقت کی ضرورت ہے کہ جو اردو اور ہندی میں لوک ادب کا مشترکہ اثاثہ ہے اس میں جو کام پہلے ہوا ہے یہاں موجودہ دور میں ہو رہا ہے تو وہ لوگوں کے سامنے آئے خاص طور سے نئی نسل اپنی اس باوقار تاریخ کو جانیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی ہوگا۔ پہلے اجلاس میں شام 5:30 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام اردو میں لوک ادب موضوع پر سیمینار اور مشاعرے کا انعقاد آج اسٹیٹ میوزیم میں

مدھیہ پردیش اردو اکادمی، مسکرتی پریشرنگر ثقافت کے ذریعہ اہتمام پریم سن کے تحت "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرے کا انعقاد 29 جون، 2024 کو شام 05:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ بس، بھوپال میں کیا جائے گا۔

بچے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوگا جس میں وسیم بریلوی۔ بریلی، ضیا فاروقی۔ بھوپال، طاہر فراز۔ رام پور، اقبال اشہر۔ دلی، رشی شرنگاری۔ بھوپال، بدر واسطی۔ بھوپال، ڈاکٹر پرانتھنا پنڈت۔ بھوپال جیسے معروف شعراء اپنا کلام پیش کریں گے۔ ڈاکٹر نصرت مہدی نے مزید تفصیلات دیتے ہوئے کہا کہ سیمینار میں رجسٹریشن کر کے شامل ہونے والے طلباء، ریسرچ اسکالروں اور پروفیسروں کو اکادمی کے ذریعے شوقیہ دیے جائیں گے۔ انھوں نے شہر کے سبھی مہبان ادب و فن سے پروگرام میں شرکت کرنے کی درخواست کی ہے۔



اکرام الدین۔ نئی دہلی اور عذرا نقوی۔ نئی دہلی "اردو میں لوک ادب" موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار کریں گے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7

بھوپال: اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے بارے میں بتاتے ہوئے کہا کہ اردو میں لوک ادب کی روایت بہت قدیم اور ثروت مند ہے لیکن اردو میں اس موضوع پر بہت ہی کم پروگرام منعقد ہوئے ہیں جبکہ یہ وقت کی ضرورت ہے کہ جو اردو اور ہندی میں لوک ادب کا مشترکہ اثاثہ ہے اس میں جو کام پہلے ہوا ہے یہاں موجودہ دور میں ہورہا ہے تو وہ لوگوں کے سامنے آئے خاص طور سے نئی نسل اپنی اس باوقار تاریخ کو جانیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی ہوگا۔ پہلے اجلاس میں شام 30:5 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں۔ بھوپال، پروفیسر خواجہ محمد

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام

”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرے کا انعقاد آج اسٹیٹ میوزیم

معروف شعراء اپنا کلام پیش کریں گے۔ ڈاکٹر نصرت مہدی نے مزید تفصیلات دیتے ہوئے کہا کہ سیمینار میں رجسٹریشن کر کے شامل ہونے والے طلباء، ریسرچ اسکالروں اور پروفیسروں کو اکادمی کے ذریعے سرٹیفکیٹ دیے جائیں گے۔ انھوں نے شہر کے سبھی محبان ادب و فن سے پروگرام میں شرکت کرنے کی درخواست کی ہے۔

خیالات کا اظہار کریں گے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض سینئر ادیب اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوگا جس میں وسیم بریلوی (بریلی)، ضیا فاروقی (بھوپال)، طاہر فراز (رام پور)، اقبال اشہر (دلی)، رشی شرنگاری (بھوپال)، بدر واسطی (بھوپال)، ڈاکٹر پرارتنہا پنڈت (بھوپال) جیسے

بھوپال 28 جون: مدھیہ پردیش اردو اکادمی، سنسکرتی پریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت اردو میں لوک ادب موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2023 کو شام 5:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ بلس، بھوپال میں کیا جائے گا۔ اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے بارے میں بتاتے ہوئے کہا کہ اردو میں لوک ادب کی روایت بہت قدیم اور ثروت مند ہے لیکن اردو میں اس موضوع پر بہت ہی کم پروگرام منعقد ہوئے ہیں جبکہ یہ وقت کی ضرورت ہے کہ جو اردو اور ہندی میں لوک ادب کا مشترکہ اثاثہ ہے اس میں جو کام پہلے ہوا ہے یہاں موجودہ دور میں ہو رہا ہے تو وہ لوگوں کے سامنے آئے خاص طور سے نئی نسل اپنی اس باوقار تاریخ کو جانیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی ہوگا۔ پہلے اجلاس میں شام 5:30 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں (بھوپال)، پروفیسر خواجہ محمد اکرام الدین (نئی دہلی) اور عذران نقوی (نویڈا) ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر اپنے

ایم پی انسانی حقوق کمیشن میں سمر انٹرن شپ پروگرام منعقد

بھوپال 28 جون: ایم پی انسانی حقوق کمیشن میں ہر سال منعقد ہونے والے موسم گرما اور سرما کے سیشن کے دوران قانون کی فیکلٹی کے طلباء کے لیے ایک ماہ کا انٹرن شپ پروگرام منعقد کیا جاتا ہے۔ اسی سلسلے میں 03 جون 2024 سے 28 جون 2024 تک سمر انٹرن شپ پروگرام کے دوران ملک کی نامور لاء یونیورسٹیوں اور کالجوں میں زیر تعلیم فیکلٹی آف لاء کے طلباء کو حقوق اور کمیشن کے کام کاج اور مختلف قانونی موضوعات پر تربیت دی گئی۔ انٹرن شپ میں بنیادی طور پر نیشنل لاء انسٹی ٹیوٹ یونیورسٹی بھوپال، جاگرن لیک سٹی یونیورسٹی بھوپال، کیرئیر کالج آف لاء بھوپال، دستھلی ودیا پیٹھ یونیورسٹی راجستھان او پی جنڈل گلوبل یونیورسٹی سونی پت، ہریانہ، راجیوگانندھی نیشنل یونیورسٹی آف لاء، پنجاب، اینکلیہ ڈی وائی پائل یونیورسٹی لوہیگاؤں پونے، مہاراشٹر، نیشنل لاء انسٹی ٹیوٹ یونیورسٹی ناگپور، دھرم شاستر نیشنل لاء یونیورسٹی جبل پور، منگلا تین یونیورسٹی جبل پور، دیوی اہلیہ یونیورسٹی اندور اور دیگر یونیورسٹیوں کے طلباء شامل ہوئے۔ انسانی حقوق کمیشن کے چیئر مین مسٹر منوہر ممتانی نے 03 جون 2023 کو تربیت کا باقاعدہ افتتاح کیا۔

'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरा आज

भोपाल. मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बज्मे सुखन के अंतर्गत "सोंधी खुशबू मिट्टी की" के तहत "उर्दू में लोक साहित्य" विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन 29 जून, शाम 5:30 बजे राज्य संग्रहालय में किया जाएगा। प्रथम सत्र में शाम 5:30 बजे व्याख्यान के तहत डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अज़रा नक्वी, नोएडा "उर्दू में लोक साहित्य" विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। इस सत्र का संचालन इक़बाल मसूद, भोपाल द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7 बजे मुशायरा आयोजित किया जाएगा, जिसमें वसीम बरेलवी, बरैली जिया फारूकी, भोपाल ताहिर फराज़, रामपुर इक़बाल अशहर, दिल्ली, ऋषि श्रृंगारी, भोपाल बद्र वास्ती, भोपाल डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल आदि के नाम शामिल हैं।

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد

مدھیہ پردیش اردو اکلیمہ سنسکرتی پریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2024 کو شام 05:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ ہلس، بھوپال میں کیا گیا۔



ایک دم ہوئی میں فقیر ہوں اپنے بچے سے باہر گیا ہی نہیں
جب بھی چاہا کہ نکلوں تو رسوائی بھی مسکرائی ہوئی ساتھ میرے چلی
(ضیا فاروقی۔ بھوپال)

زندگی یہ ہماری سنور جائے گی
دور تک روشنی ہی بکھر جائے گی
چاندنی بازوؤں میں اتر آئے گی
کاش ل جاؤ تم دن ڈلے چاند تاروں کی چمکیاں تے
(طاہر فراز۔ رام پور)

جانے کیسے میری پریت کی دھوپ ڈھلی
کس کی چھاؤں پڑی میرے شیدائی پر
دھیان پھنسا ہے ایک ادھر تے رشتے میں
آنکھ کی ہے کرتے کی ترپائی پر

(اقبال اشہر۔ دلی)
میں نے جو بھی گیت لکھے ہیں، سارے تیرے نام لکھے ہیں
تو مانے مت مانے، صبح لکھے ہیں شام لکھے ہیں
(رشی شرنگاری۔ بھوپال)

تیری آہٹ تیری خوشبو چوہارے سے آنگن تک
کیسے کس گے بن تیرے دن آنے والے ساون تک
تم کیا بدلے سارے موسم بدلے بدلے رہتے ہیں
پوری بارش بیت گے اور گھر میں نہ آئی سیلن تک
(بدر واسطی۔ بھوپال)

آج جھوں درپن کے آگے
کجری کاری رین جگا کے
کو بیامن بھانا ہے
سکھی تو جن گھر جانا ہے
(ڈاکٹر پارتھنا پنڈت۔ بھوپال)

مشاعرے کی نظامت کے فرائض بدر واسطی نے
انجام دیے۔ پروگرام کے آخر میں ڈاکٹر نصرت مہدی نے
تمام شرکاء کا شکریہ ادا کیا۔
(وسیم بریلوی۔ بریلی)

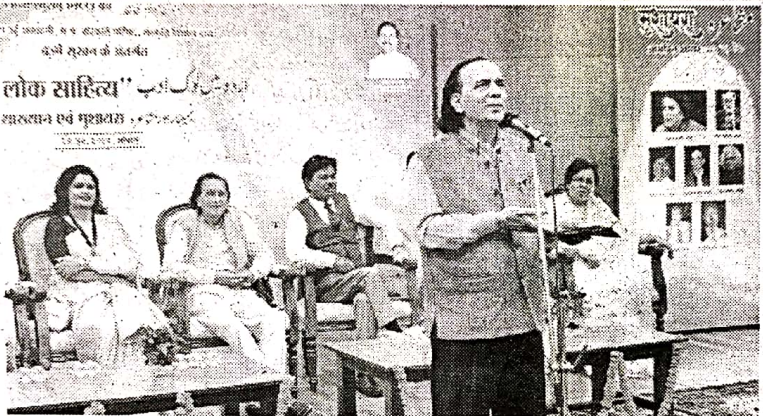
انسان کو جس و اشتیاق حرکت و عمل، حیرت و مسرت کے
جذبات سے سرشار کر کے زندگی کو پر کیف بنانے میں اہم
کردار ادا کیا ہے۔ لسانی رنگارنگی، تہذیبی بولچومنی، مختلف
النوع رسم و رواج کے اعتبار سے بھی لوک ادب یا عوامی
ادب اپنی خاص اہمیت رکھتا ہے۔ پروفیسر خواجہ اکرام
الدین نے کہا کہ لوک ادب ہماری صدیوں پرانی
تہذیب و تمدن کا عکاس اور غماز ہے۔ لوک ادب کی خاص
صفت یہ ہے کہ اس میں کوئی تصنع اور بناوٹ نہیں ہے۔
یہ خالص انسانی جذبات و احساسات اور مشاہدات کا
ترجمان ہے۔ جس طرح ہندستان ایک عظیم ملک ہے
اسی طرح یہاں کا لوک ادب بھی عظیم ہے۔ ہندستان
کے الگ الگ خطے کی جس طرح تہذیب و ثقافت الگ
الگ ہے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض اقبال
مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے
کل ہند مشاعرہ منعقد ہوا جس میں عالی شہرت یافتہ شعراء
نے اپنا کلام پیش کیا۔ مشاعرے کی صدارت پروفیسر وسیم
بریلوی نے فرمائی۔ جن شعراء نے کلام پیش کیا ان کے
نام اور اشعار درج ذیل ہیں۔

میرے گاؤں کی تیری مہک بڑی لیلی
تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی بھیلی
(وسیم بریلوی۔ بریلی)

بھوپال: پروگرام کی شروعات میں اردو اکادمی کی
ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے اغراض و
مقاصد پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ مدھیہ پردیش اردو
اکادمی کا مقصد ہے کہ لوک ادب کی اہمیت اور اس کے
ثقافتی ورثے پر بات ہو اور لوگ اپنے اس قیمتی سرمائے
کے بارے میں جانیں اور اس کی اہمیت کو یاد رکھیں۔ لوک
ادب کی بھی قوم کی زبان، ثقافت اور روایات کا آئینہ دار
ہوتا ہے، لوک کہانیوں اور ضرب الامثال اور لوک شاعری
میں گہری اخلاقی تعلیمات پوشیدہ ہوتی ہیں، جو نسل در نسل
متقل ہوتی ہیں۔ ہمارے یہاں کی لوک کہانیاں، جیسے کہ
"بچ تتر" اور "الف لیلہ" ایسی ہی مثالیں ہیں۔ پروگرام
دو اجلاس پر جمنی تھا۔ پہلے اجلاس میں شام 5:30 بجے
سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں۔ بھوپال، پروفیسر
خواجہ محمد اکرام الدین۔ نئی دہلی اور عذرا نقوی۔ نوبلیڈا
اردو میں لوک ادب، موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار
کیا۔ سیمینار کی صدارت فرماتے ہوئے ڈاکٹر محمد نعمان
خاں نے کہا کہ لوک ادب ہماری ایسی وسیع روایتی دھروہر
یا ادبی سرمایہ ہے جس پر ہمارے آج کے ادب کی بنیاد
استوار ہے۔ انسانی ارتقائی تاریخ میں اساطیر (MY
TH) کی بھی خاص اہمیت رہی ہے۔ بعض دیو مالائی
ما فوق الفطرت عناصر اور جانک یا بچ تتر کہانیوں نے

میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی الیبیلی :: تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی پہیلی

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد



ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ منعقد۔ اس موقع پر ایم پی اردو اکادمی کے سربراہ اور دیگر اہلکاروں نے شرکت کی۔

پریت کی دھوپ ڈھلی، کس کی چھاؤں پڑی
میرے شیداں پر، دھیان چھتا ہے ایک
ادھرتے رشتے میں، آنکھ کی ہے کرنے کی
ترپائی پر (اقبال اشہر۔ دلی)۔ میں نے جو
بھی گیت لکھے ہیں سارے تیرے نام لکھے
ہیں، تو مانے مت مانے، صبح لکھے ہیں شام
لکھے ہیں (رشی شرنگاری۔ بھوپال)۔ تیری
آہت تیری خوشبو چو بارے سے آگن تک،
کیسے لکھیں گے بن تیرے دن آنے والے
سادان تک، ہم کیا بدلے سارے موسم بدلے
بدلے رہتے ہیں، پوری بارش بیت کی اور گھر
میں نہ آئی سین تک (بدر واسطی۔
بھوپال)۔ آج جوں درین کے آگے کجری
کاری رین چگا کے، مجھ کو پینا من بھانا
ہے سبھی تو جن گھر جاتا ہے (ڈاکٹر پارتھنا
پنڈت۔ بھوپال)۔ مشاعرے کی نظامت
کے فریضے بڑا واسطی نے بحسن خوبی انجام
دئے۔ پروگرام کے آخر میں ڈاکٹر نصرت
مہدی نے تمام شرکاء کا شکریہ ادا کیا۔

بھوپال 29 جون: عہد پر دیش اردو
اکادمی، شکرگڑی پریشنگ ٹھانڈ کے زیر
اہتمام بزم سخن کے تحت ”اردو میں لوک
ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا
انقصاد 29 جون، 2023 کو شام 3:05
بجے ایسٹ میوزیم، شاہد پلس، بھوپال میں
کیا گیا۔ پروگرام کی شروعات میں اردو
اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے
پروگرام کے اغراض و مقاصد پر روشنی ڈالنے
ہوئے کہا کہ عہد پر دیش اردو اکادمی کا
مقصد ہے کہ لوک ادب کی اہمیت اور اس
کے ثقافتی درجے پر بات ہو اور لوگ اپنے
اس قیمتی سرمایے کے بارے میں جانتیں اور
اس کی اہمیت کو یاد رکھیں۔ لوک ادب کی بھی
قوم کی زبان، ثقافت اور روایات کا آئینہ دار
ہوتا ہے، لوگ کہتے ہیں اور ضرب الامثال اور
لوک شاعری میں گہری اخلاقی تعلیمات
پوشیدہ ہوتی ہیں، جو سب درنسل منتقل ہوتی
ہیں۔ ہمارے یہاں کی لوک کہانیاں، چبھے
کہ بچے تیز اور الف لیلہ ایسی ہی مثالیں ہیں
۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی تھا۔ پہلے اجلاس
میں شام 3:05 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد
نعمان خاں (بھوپال)، پروفسر خواجہ محمد
اکرام الدین (نئی دہلی) اور عدرا نقوی نے
توجیہ دے کر اردو میں لوک ادب موضوع پر
اپنے خیالات کا اظہار کیا۔ سیمینار کی
صدارت فرماتے ہوئے ڈاکٹر محمد نعمان خاں
نے کہا کہ لوک ادب ہماری اسکا و قیہ روایتی
دھروہریا ادبی سرمایہ ہے جس پر ہمارے آج
کے لوگ کی بنیاد ستوار ہے۔ انسانی ارتقائی
تاریخ میں اساطیر (MY TH) کی بھی

اجلاس کی نظامت کے فریضے اقبال مسعود
نے انجام دیئے۔ دوسرے اجلاس میں شام
7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوا جس میں
عالمی شہرت یافتہ شعراء نے اپنا کلام پیش
کیا۔ مشاعرے کی صدارت پروفسر ویم
بریلوی نے فرمائی۔ جن شعراء نے کلام پیش
کیا ان کے نام اور اشعار درج ذیل
ہیں۔ میرے گاؤں کی مٹی تیری مہک بڑی
الیبیلی، تیرا بھولا پن دنیا کی سب سے بڑی
پہیلی (ویم بریلوی۔ بریلی)۔ ایک مدت
ہوئی میں فقیر ہوں اپنے گئے سے باہر گیا ہی
نہیں، جب بھی چاہا کہ لکھوں تو رسوائی بھی

اس
اور
میں
ہماری
اور
ہندی،
فارسی
اور
عربی
سے
مثالیں
بھی
پیش
کیں۔
اس

‘उर्दू में लोक साहित्य’ विषय पर व्याख्यान और मुशायरा आज

भोपाल. मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बज्मे सुखन के अंतर्गत "सौंधी खुशबू मिट्टी की" के तहत "उर्दू में लोक साहित्य" विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन 29 जून, शाम 5:30 बजे राज्य संग्रहालय में किया जाएगा। प्रथम सत्र में शाम 5:30 बजे व्याख्यान के तहत डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अज़रा नक्वी, नोएडा "उर्दू में लोक साहित्य" विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। इस सत्र का संचालन इकबाल मसूद, भोपाल द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7 बजे मुशायरा आयोजित किया जाएगा, जिसमें वसीम बरेलवी, बरैली जिया फारूकी, भोपाल ताहिर फराज़, रामपुर इकबाल अशहर, दिल्ली, ऋषि श्रृंगारी, भोपाल बद्र वास्ती, भोपाल डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल आदि के नाम शामिल हैं।

भोपाल • शनिवार, 29 जून 2024

भास्कर

आज के कार्यक्रम

लोक साहित्य पर व्याख्यान, मुशायरा

सिटी रिपोर्टर। मप्र उर्दू अकादमी की ओर से बज्जे सुखन के अंतर्गत 'सौधी खुशबू मिट्टी की' शृंखला के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान और मुशायरे का आयोजन शनिवार शाम 5:30 बजे राज्य संग्रहालय में होने जा रहा है। उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने बताया- उर्दू में लोक साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन और समृद्ध है, लेकिन उर्दू में इस विषय पर बहुत ही कम कार्यक्रम होते हैं। कार्यक्रम दो सत्रों में होगा।

स्वदेश

www.Swadesh.in

भोपाल, शनिवार 29 जून, 2024

उर्दू में लोक साहित्य पर व्याख्यान और मुशायरा आज

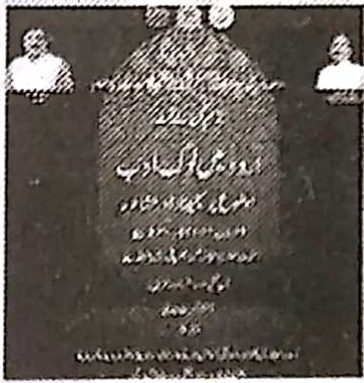
भोपाल। उर्दू अकादमी द्वारा शनिवार, 29 जून को राज्य संग्रहालय में 'सौधी खुशबू मिट्टी का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में 'उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरा होगा। व्याख्यान शाम 5:30 बजे से होगा तथा मुशायरा शाम 7 बजे होगा।

राज्य संग्रहालय में आज सजेगा मुशायरा, देशभर के शायर पढ़ेंगे कलाम

राज्य संग्रहालय में मप्र उर्दू अकादमी द्वारा शनिवार को बच्चे सुखन के अंतर्गत 'सौंधी खुशबू मिट्टी की' के तहत 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन किया जाएगा। निदेशक डा. नुसरत मेहदी ने बताया कि उर्दू में लोक साहित्य की परम्परा प्राचीन और समृद्ध है, लेकिन लोगों तक यह विषय पर कम कार्यक्रम हुए हैं, जबकि ये समय की जरूरत है कि जो उर्दू और हिन्दी में लोक साहित्य का संयुक्त सरमाया है। कार्यक्रम दो सत्रों पर आधारित होगा प्रथम सत्र में शाम 5:30 बजे व्याख्यान के तहत डा. नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अजरा नक्वी, नोएडा 'उर्दू में लोक साहित्य' विषय पर वक्तव्य देंगे। सत्र का संचालन इकबाल मसूद द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7 बजे अभा मुशायरा होगा, जिसमें कलाम पेश करने वाले शायरों में वसीम बरेलवी, बरैली जिया फारूकी, भोपाल ताहिर फराज, रामपुर इकबाल अशहर, दिल्ली, ऋषि श्रृंगारी, भोपाल बद्र वास्ती, भोपाल डा. प्रार्थना पंडित, भोपाल आदि के नाम शामिल हैं।

اردو اکادمی کا "اردو میں لوک ادب"

موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ آج ہوگا منعقد



بھوپال 28 جون (پریس ریلیز) مدھیہ پردیش اردو اکادمی، سنگھرتی پریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت "اردو میں لوک ادب" موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2024 کو شام 5:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ ہلس بھوپال میں کیا جائے گا۔ اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے بارے میں بتاتے ہوئے کہا کہ اردو میں لوک ادب

کی روایت بہت قدیم اور ثروت مند ہے لیکن اردو میں اس موضوع پر بہت ہی کم پروگرام منعقد ہوئے ہیں جبکہ یہ وقت کی ضرورت ہے کہ جو اردو اور ہندی میں لوک ادب کا مشترکہ اثاثہ ہے اس میں جو کام پہلے ہوا ہے یہاں موجودہ دور میں ہو رہا ہے تو وہ لوگوں کے سامنے آئے خاص طور سے نئی نسل اپنی اس باوقار تاریخ کو جانیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی ہوگا۔ پہلے اجلاس میں شام 5:30 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں بھوپال، پروفیسر خواجہ محمد اکرام الدین نئی دہلی اور عذرا نقوی نوئیڈا "اردو میں لوک ادب" موضوع پر اپنے خیالات کا اظہار کریں گے۔ اس پروگرام کی نظامت کے فرائض اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوگا جس میں وسیم بریلوی بریلی، ضیا فاروقی بھوپال، طاہر فرارام پور، اقبال اشہر دتی، رشی شرنگاری بھوپال، بدر واسطی بھوپال، ڈاکٹر پرارتنہا پنڈت بھوپال جیسے معروف شعراء اپنا کلام پیش کریں گے۔ ڈاکٹر نصرت مہدی نے مزید تفصیلات دیتے ہوئے کہا کہ سیمینار میں رجسٹریشن کر کے شامل ہونے والے طلباء، ریسرچ اسکالروں اور پروفیسروں کو اکادمی کے ذریعے سرٹیفکیٹ دیے جائیں گے۔ انھوں نے شہر کے سبھی محبان ادب و فن سے پروگرام میں شرکت کرنے کی درخواست کی ہے۔

मप्र उर्दू अकादमी द्वारा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान और मुशायरा आज राज्य संग्रहालय में

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा बरमे सुखन के अंतर्गत सोंधी खुशबू मिट्टी की के तहत उर्दू में लोक साहित्य विषय पर व्याख्यान एवं मुशायरे का आयोजन 29 जून, 2024, शाम 5-30 बजे राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल में किया जाएगा। उर्दू अकादमी की निदेशक डॉ. नुसरत मेहदी ने कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि उर्दू में लोक साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन और समृद्ध है लेकिन उर्दू में इस विषय पर बहुत ही कम कार्यक्रम आयोजित हुए हैं जबकि ये समय की जरूरत है कि जो उर्दू और हिन्दी में लोक साहित्य का संयुक्त सरमाया है उसमें जो काम पहले

हुआ है और वर्तमान में भी हो रहा है तो वो लोगों के सामने आये। विशेष रूप से युवा पीढ़ी अपने इस गौरवपूर्ण इतिहास को जाने। इसी को दृष्टिगत रखते हुए ये कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम दो सत्रों पर आधारित होगा प्रथम सत्र में शाम 5-30 बजे व्याख्यान के तहत डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल प्रो. ख्वाजा मो. इकरामुद्दीन, दिल्ली एवं अजरा नक्वी, नोएडा उर्दू में लोक साहित्य विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। इस सत्र का संचालन इकबाल मसूद, भोपाल द्वारा किया जाएगा। दूसरे सत्र में शाम 7-00 बजे अखिल भारतीय मुशायरा आयोजित किया जाएगा जिसमें देश के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शायर मौजूद रहेंगे। मुशायरे में कलाम पेश करने वाले शायरों में वसीम बरेलवी, बरैली जिया फारूकी, भोपाल ताहिर फराज, रामपुर इकबाल अशहर, दिल्ली, ऋषि श्रृंगारी, भोपाल बद्र वास्ती, भोपाल डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल आदि के नाम शामिल हैं। डॉ. नुसरत मेहदी ने अधिक जानकारी देते हुए कहा कि व्याख्यान में रजिस्ट्रेशन करके उपस्थित होने वाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं प्राध्यापकों को अकादमी द्वारा प्रमाण-पत्र दिये जायेंगे। डॉ. नुसरत मेहदी ने नगर के सभी साहित्य एवं कला प्रेमियों से कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

व्याख्यान

"उर्दू में लोक अदब"

वक्ता

डॉ. मो. नौमान खान, भोपाल

प्रो. ख्वाजा मो. इकराम उद्दीन, दिल्ली

अजरा नक्वी, नोएडा

संचालन:- इकबाल मसूद, भोपाल



मुशायरा

आमंत्रित शायर

वसीम बरेलवी, बरैली

जिया फारूकी, भोपाल

ताहिर फराज, रामपुर

इकबाल अशहर, दिल्ली

ऋषि श्रृंगारी, भोपाल

बद्र वास्ती, भोपाल

डॉ. प्रार्थना पंडित, भोपाल



कृपया समय पर उपस्थित हो कार्यक्रम के दौरान अपना मोबाइल बंद/वाइब्रेशन मोड पर रखें

ایم پی اردو اکادمی کے زیر اہتمام

”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر سیمینار اور مشاعرے کا انعقاد آج اسٹیٹ میوزیم

معروف شعراء اپنا کلام پیش کریں گے۔ ڈاکٹر نصرت مہدی نے مزید تفصیلات دیتے ہوئے کہا کہ سیمینار میں رجسٹریشن کر کے شامل ہونے والے طلباء، ریسرچ اسکالروں اور پروفیسروں کو اکادمی کے ذریعے سرٹیفکیٹ دیے جائیں گے۔ انھوں نے شہر کے سبھی محبان ادب و فن سے پروگرام میں شرکت کرنے کی درخواست کی ہے۔

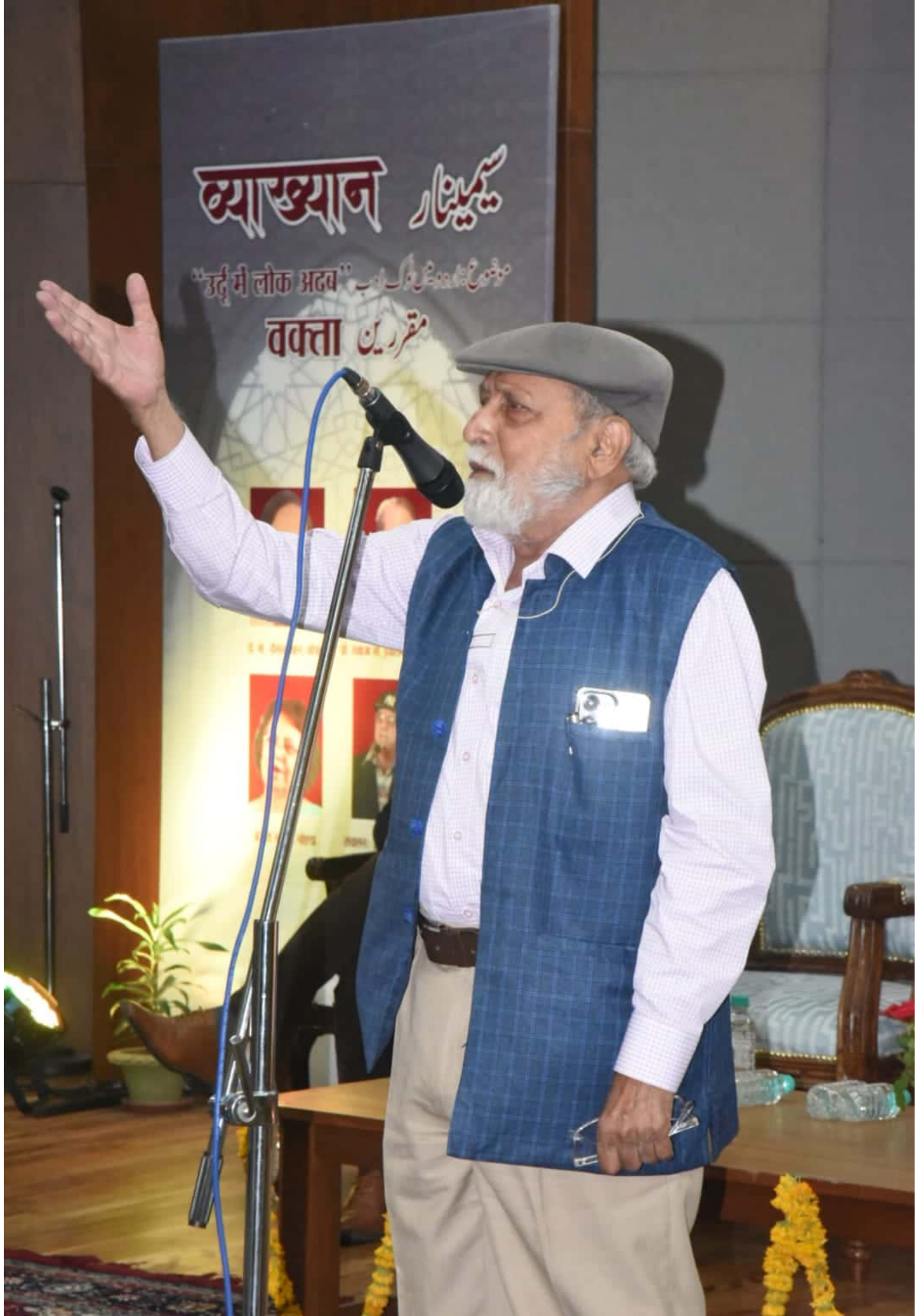
خیالات کا اظہار کریں گے۔ اس اجلاس کی نظامت کے فرائض سینئر ادیب اقبال مسعود انجام دیں گے۔ دوسرے اجلاس میں شام 7 بجے کل ہند مشاعرہ منعقد ہوگا جس میں وسیم بریلوی (بریلی)، ضیا فاروقی (بھوپال)، طاہر فراز (رام پور)، اقبال اشہر (دلی)، رشی شرنکاری (بھوپال)، بدر واسطی (بھوپال)، ڈاکٹر پرارتنہ پنڈت (بھوپال) جیسے

بھوپال 28 جون: مدھیہ پردیش اردو اکادمی، سنسکرتی پریشد محکمہ ثقافت کے زیر اہتمام بزم سخن کے تحت اردو میں لوک ادب موضوع پر سیمینار اور مشاعرہ کا انعقاد 29 جون، 2023 کو شام 5:30 بجے اسٹیٹ میوزیم، شاملہ بلس، بھوپال میں کیا جائے گا۔ اردو اکادمی کی ڈائریکٹر ڈاکٹر نصرت مہدی نے پروگرام کے بارے میں بتاتے ہوئے کہا کہ اردو میں لوک ادب کی روایت بہت قدیم اور ثروت مند ہے لیکن اردو میں اس موضوع پر بہت ہی کم پروگرام منعقد ہوئے ہیں جبکہ یہ وقت کی ضرورت ہے کہ جو اردو اور ہندی میں لوک ادب کا مشترکہ اثاثہ ہے اس میں جو کام پہلے ہوا ہے یہاں موجودہ دور میں ہو رہا ہے تو وہ لوگوں کے سامنے آنے خاص طور سے نئی نسل اپنی اس باوقار تاریخ کو جانیں۔ پروگرام دو اجلاس پر مبنی ہوگا۔ پہلے اجلاس میں شام 5:30 بجے سیمینار کے تحت ڈاکٹر محمد نعمان خاں (بھوپال)، پروفیسر خواجہ محمد اکرام الدین (نئی دہلی) اور عذرا نقوی (لویڈا) ”اردو میں لوک ادب“ موضوع پر اپنے











श. शंकर शर्मा
सुपरी



“सौधी खुशबू मिट्टी की”

मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा

बज़्मे सुखन के अंतर्गत

“उर्दू में लोक साहित्य”

थारख्यान एवं मुशायरा

29 जून, 2024, भोपाल











व्याख्यान

“उर्दू में लोक अदब”

वक्ता



“जोषी उलहास मिहरी”

بیمینار

اردو میں لوک ادب "زرد میں لوک ادب"

مقررین



سوانحی خوشبو مٹی کی "سودھی سوانحی مٹی کی"

مध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा

बज़मे सुखन के अंतर्गत

اردو میں لوک ادب

"زرد میں لوک ادب"

سیمینار اور مشاعرہ مشاہیرا





“सौधी खुशबू मिट्टी की” کی خوشبو مٹی کی

अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति

बज़्मे सुखन के अंतर्गत

“उद्देश्य” ادب

मुशायरा اور مشاعرہ

, 2024, भोपाल



मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी, म.प्र. संस्कृति परिषद, संस्कृति विभाग द्वारा
बज़्मे सुखन के अंतर्गत

“उर्दू में लोक साहित्य” اردو میں لوک ادب

تصانیف و مباحثات سے مشاعرہ

29 जून, 2024, भोपाल











